एक परिचय

''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21)।

मिज़ोरी में स्प्रिंगफील्ड के निकट कैम्प हैप्पी हॉलो में एक ट्रेनिंग सीरीज़ के लिए 1967 में मुझे एक अभियान दल मिला। उससे पिछली गर्मियों में मैंने लोगों को मसीह में लाने के लिए उत्तर-पूर्वी राज्यों में इस दल के साथ काम किया था। हम लोगों को बपस्तिमा लेने के लिए समझाने में सफल भी हो गए थे, परन्तु उनमें से बहुत से लोग मसीह में विश्वासी नहीं रहे थे। उनके पुराने पापमय जीवन को छुड़ाने और मसीह के लिए जीना आरम्भ करने तथा उत्साहित करने के लिए हम कुछ करना चाहते थे। हमने यह महसूस किया कि बपस्तिमा लेने वालों के जीवन बिना समर्पण के नहीं बदले थे। हम चाहते थे कि बपतिस्मा उनके लिए सचमुच एक नया जीवन हो, न कि केवल खोखला संस्कार।

बपतिस्मे के प्रति कम से कम छह मुख्य विचार दिए गए हैं:

पहला विचार यह है, कि एक सेक्रामेंट होने के कारण, बपतिस्मा देने वाले के सही शब्दों तथा ढंग के आधार पर बपतिस्मा लेने वालों के पाप जल से धोए जाते हैं।

> सैक्रामेन्ट किसी वस्तु के पवित्र होने का चिह्न है क्योंकि यह यीशु द्वारा दिए गए अनुग्रह को उत्पन्न करता है। इस चिह्न से केवल इसका अर्थ ही प्रकट नहीं होता, बल्कि किसी न किसी प्रकार वह वास्तव में अनुग्रह का भी कारण बनता है। ... इस कारण सेवक जब बपतिस्मा लेने वाले के सिर पर पानी डालता है ... तो सेवक के शब्दों से ही जो कलीसिया के नाम में ऐसा करता है पानी उस व्यक्ति के पाप के पुराने दाग को मिटाकर उसे कलीसिया का सदस्य बना देता है।[1]

दूसरा विचार है, आज्ञाकारिता के एक कार्य के रूप में, बपतिस्मे से पता चलता है कि किसी का उसके पापों से उद्धार हो गया है। बपतिस्मे का उद्देश्य ''उद्धार को दिखाना है, इसे प्राप्त करना नहीं। ... यह उद्धार के स्वरूप तथा संकेत का चित्रण है। ... उद्धार के लिए बपतिस्मा होना अनिवार्य नहीं है।''[2]

द NIV बाइबल में प्रेरितों 2:38 के सम्बन्ध में यह टिप्पणी जोड़ी गई है, ''ऐसे नहीं कि बपतिस्मे से क्षमा नहीं होती है बल्कि, क्षमा तो बपतिस्मे के चिह्न से प्रकट किए जाने से होती है।''[3] उसी बाइबल में प्रेरितों 22:16 के विषय में यह टिप्पणी दी गई है, ''बपतिस्मा

भीतरी अनुग्रह का बाहरी रूप है। नये नियम में वास्तविकता तथा संकेत का गहरा सम्बन्ध है।''[4]

तीसरा विचार है कि मसीह की आज्ञा के रूप में, यह वह कार्य है जो किसी को कलीसिया में लाता है।

> बपतिस्मा, न केवल (दिखाई देने वाली) कलीसिया में बपतिस्मा लेने वाले के प्रवेश के लिए, बल्कि उसके लिए अनुग्रह की वाचा का चिह्न तथा मुहर, मसीह में उसके भाग बनने, नया जन्म पाने, पापों की क्षमा और यीशु मसीह के द्वारा उसे अपने आपको परमेश्वर को देने, नये जीवन की चाल चलने के लिए यीशु मसीह द्वारा ठहराया गया नये नियम का एक संस्कार (सैक्रामेन्ट)है।[5]

चौथा विचार है कि एक धार्मिक कृत्य के रूप में यह किसी वयस्क, या शिशु (जब उसका नामकरण होता है) का प्रभु के प्रति समर्पण समारोह है, और इसमें बच्चे के पालन-पोषण के लिए शिशु के माता-पिता समर्पण भी करते हैं।

> नये नियम का संकेत होने के कारण, माता-पिता या अभिवावकों की बिनती पर, जो उनके लिए अनिवार्य मसीही शिक्षा देने का आश्वासन दें, छोटे बच्चों को बपतिस्मा दिया जा सकता है।[6]

> फिर, मसीही बपतिस्मे का क्या अर्थ है? यह किसी के पापों को धोने के लिए नहीं है, क्योंकि पाप धोने का कार्य केवल यीशु मसीह में विश्वास से ही होता है (इफिसियों 1:7)। बल्कि, यह इस बात की सार्वजनिक गवाही है कि उसने यहोवा परमेश्वर के सामने सच्चे मन से समर्पण किया है और उसकी इच्छा के सामने अपने आपको सौंप रहा है।[7]

पांचवां विचार है कि परमेश्वर की आज्ञा का विश्वास के साथ पालन करने के कार्य के रूप में, बपतिस्मे से पापों की क्षमा और बपतिस्मे से जुड़े परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सभी दूसरे लाभ मिलते हैं, चाहे बपतिस्मा लेने वालों को इसके उद्देश्य की समझ हो या न हो।

> ... चाहे वह व्यक्ति क्षमा के बारे में अनजान हो, फिर भी उसका बपतिस्मा पवित्र शास्त्र के अनुसार माना जाना चाहिए। इसलिए, यह धारणा गलत है कि बपतिस्मे के समय किसी को ''पापों की क्षमा'' के इसके सही-सही अर्थ का पता होना चाहिए।[8]

> परन्तु श्री [अलेग्ज़ेंडर] कैम्पबेल यह विश्वास करते हुए कि इन सब बातों में यहां सच्चे मन से किसी ने यीशु में विश्वास किया है चाहे बपतिस्मा लेने वाले को संगठन के बारे में पता हो या नहीं। इसको उचित ठहराने के लिए दी गई इन छोटी बातों को सामने रखकर फिर से डुबकी का बपतिस्मा देने के विरुद्ध थे, उनकी सोच सही थी कि जब तक बपतिस्मा लेने वाला यह न समझता हो कि पहला बपतिस्मा लेते समय उसे मसीह में विश्वास नहीं था दोबारा बपतिस्मा लेना किसी

कारण से उचित नहीं ठहराया जा सकता।[9]

> जहां तक डुबकी के नमूने की बात है, जिसे लेने का अर्थ बपतिस्मा (डुबकी) लेने वालों के लिए आशीष की प्रतिज्ञा है इसमें डुबकी (का बपतिस्मा) लेने वाले या देने वाले का कोई कर्तव्य नहीं है। यह आशीष मनुष्य से नहीं बल्कि परमेश्वर से मिलती है। कुछ शर्तों सहित इसकी प्रतिज्ञा के कारण, जब उन शर्तों को पूरा कर दिया जाता है, तो वह अपने वचन की तरह ही भला करेगा, और यह मानना बहुत ही असंगत होगा कि वह उन आशिषों को केवल इसलिए रोक लेगा क्योंकि मुझे यह पता नहीं कि मेरे लिए उनको पूरा करना आवश्यक है। इसलिए, जब तक प्रतिज्ञा के पूरा होने के लिए उसको पता होने की शर्त न हो, ऐसा नहीं कि केवल प्रतिज्ञा की अज्ञानता के कारण किसी को वह आशीष न मिले। जिसकी कल्पना निश्चय ही नये नियम के किसी पाठक द्वारा नहीं की जा सकती।[10]

इस अध्ययन में छठे विचार की ही व्याख्या की गई है। पाठों की इस कड़ी का उद्देश्य परमेश्वर की बात मानने के लिए पवित्र शास्त्र के अनुसार बपतिस्मे को समझना है। जो कोई विश्वास कर लेता है कि यीशु ही मसीह, प्रभु, उद्धारकर्ता और परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 3:16; प्रेरितों 2:36) और अपने पापों की क्षमा के लिए उसके लहू में विश्वास करता है (रोमियों 3:25) उसे यीशु को पहनने (गलतियों 3:27) और अपने पापों की क्षमा के लिए (प्रेरितों 2:38), एक नया जीवन जीने के लिए अपने आपको बपतिस्मे में सौंप देना आवश्यक है (रोमियों 6:4)। इस प्रकार, उसके पाप क्षमा होते हैं अर्थात वह नया जन्म पा लेता है और परमेश्वर के राज्य (यूहन्ना 3:5), मसीह की देह (1 कुरिन्थियों 12:13) जो कि उसकी कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23) में मिल जाता है।

सारांश

बहुत से संगठन तथा लोग बपतिस्मे के प्रति ऐसा ही या इससे मिलता-जुलता व्यवहार करते हैं। इनमें से कई थोड़े से भाग को ढक कर आगे निकल जाते हैं, जबकि कुछ व्यवहार पूरी तरह से एक-दूसरे के विरोधी हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह तय करना है कि बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति से यीशु क्या चाहता है। क्या बपतिस्मे के पानी में किसी के पाप क्षमा करने की शक्ति है? क्या बपतिस्मा भीतरी अनुग्रह का बाहरी चिह्न है, जिससे पता चलता है कि किसी का उद्धार हो गया है? क्या यह केवल समर्पण का एक चिह्न है या ऐसा कार्य है जो लोगों को किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में प्रवेश कराता है? यदि बपतिस्मा लेने वाला न तो इसके उद्देश्य और डिजाइन और न ही उस वचनबद्धता को समझता हो जिसकी उससे अपेक्षा की जाती है तो क्या उसका बपतिस्मा मान्य है? क्या परमेश्वर की संतान बनने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए परमेश्वर की इच्छा केवल एक खोखले धार्मिक संस्कार को पूरा करना ही है? क्या परमेश्वर ने मनुष्य से कभी कोई ऐसा कार्य करने की अपेक्षा की है जिसमें उसके उद्देश्य तथा

अर्थ का उसके मन से कोई सम्बन्ध न हो ? क्या बपतिस्मा लेने वाले का नये जन्म के प्रति वचनबद्ध होना आवश्यक है ? क्या उसके लिए बपतिस्मे को उस अर्थ के प्रकाश में समझना आवश्यक है जिससे परमेश्वर ने इसे जोड़ा है ?

यदि हम समझना चाहते हैं कि परमेश्वर किसी के शारीरिक कार्य से क्या इच्छा रखता है जिसका उस अर्थ से दूर होकर जिसके साथ इसे परमेश्वर ने जोड़ा है कोई अर्थ न हो तो इन उत्तरों को खोजने का एक ही तरीका है कि बाइबल में से जांचा जाए और परमेश्वर को ही कहने दिया जाए।

पाद टिप्पणियां

[1]पॉल एच. हैलट, *वट इज़ ए कैथोलिक ?* (न्यूयार्क: मैक्मिलन कं., 1955), 125. [2]जोअ टी. ओज़ल, चर्च मैम्बर'स हैंडबुक (नैशिविल्ले: बॉडमैन प्रैस, 1962), 22. [3]कैन्नथ बार्कर, ed. द NIV स्टडी बाइबल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ौन्डर्वन, 1985), 1648. [4]वहीं, 1690. [5]वैस्टमिन्सटर कन्फ्रैशन, Chapter XXVIII, Article I, द कांस्टिट्यूशन ऑफ़ द रिफार्मड प्रेस्बिटेरियन चर्च ऑफ़ अमेरिका (फिलाडेल्फिया, पेन.: सिनड ऑफ़ रिफार्म्ड प्रेस्बिटेरियन चर्च, 1949), 48. [6]मैनुयल, 4th ed. (कैन्सास सिटी: नाज़रीन पब्लिशिंग हाऊस, 1923), 26. [7]द ट्रुथ दैट लीड्स टू एटरनल लाइफ (न्यूयार्क: वॉचटॉवर बाइबल एण्ड ट्रैक्ट सोसायटी, 1968), 183. [8]ज़िम्मी ऐलन, *रीबैप्टिज़म ?* (वैस्ट मोनरो, ला.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1991), 48. [9]राबर्ट रिचर्डसन, मेमॉयर्स ऑफ़ अलेक्ज़ेंडर कैम्पबैल vol. 2 (फिलाडेल्फिया, पेन, जे. बी. लिपिन्कॉट, 1868-70; रीप्रिंट, इंडियानापोलिस, इंड.: रिलिजियस बुक सर्विस, 1976), 443-44, ऐलन 84 में उद्धृत। [10]जे डब्ल्यू. मॅक्गार्वे, ''वट इज़ ए वैलिड इमर्शन ?'' द अमेरिकन क्रिश्चियन क्वार्टरली रीव्यू, 1862, ऐलन 94 में उद्धृत।